दैनिक भास्कर
मंगलवार, 25 मई 2021 नोएडा

कुछ गुड़ ढीला, कुछ बनिया ढीला... ले आई दूसरी लहर

गीतांजलि सक्सेना

कोरोना संग्राम

एक कटु सत्य यह भी है कि इन्सानों की सांसें बाजार में तराजू पर रख कर मोल-भाव करते देखने का अहसास इन्सानियत की सभी हदों को पार कर चुका है।

छिड़े हुए कोरोना संग्राम ने ... अपने पैर देश के शहर दर शहर इस कदर फैला कर कब्जा कर लिया है कि युद्ध में लड़ रहे सैनिकों को धराशायी करता बढ़ा ही जा रहा है। यही नहीं सभी साज सामान और अस्त्र-शस्त्र की कमी और इन विकट परिस्थितियों में हर चुनौतियों का सामना करने में पर्याप्त मदद न मिलने के कारण कोरोना के विरुद्ध इस लड़ाई में हर व्यक्ति अपने को लाचार महसूस कर रहा है। योद्धाओं की जिन्दगी का बलिदान सांसों की कीमत के माथे पर चढ़ते देख इस पीड़ा का अनुभव दुखदायी ही नहीं, बल्कि हर एक को शर्मसार भी करता है।

इन विकट परिस्थितियों में कोरोना के बिगड़े हालातों में चिन्ताएं और बढ़ती नजर आ रही हैं। जहाँ कोविड़ देश के गांवों पर अपना कब्जा करने के लिए कूच करने का बिगुल बजा चुका है, तो वहीं इसकी दूसरी लहर के कहर का दायरा बढ़ते हुए देख कर तुरंत ठोस कदम उठाने की जरूरत है। ऐसा माना जा रहा है कि ग्रामीण इलाकों में कोरोना का कहर अधिक विकराल हो सकता है, अगर इस लड़ाई में ढील बरती गई। सब जानते हैं कि देश का एक वर्ग ऐसा भी है, जिसकी झोली में उनके हिस्से की स्वास्थ्य सुविधाएं पर्याप्त नहीं हैं। यह वास्तविक सच्चाई है कि वे पहले से ही सूक्ष्म साधनों के तहत जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कोरोना के कहर को हल्के में लेने का नतीजा शहरों में हो रही ... अकल्पनीय रोष, निन्दनीय दशा व सामाजिक व्यवस्था की दुर्दशा। इन हालातों में भी कोरोना की जंग में नेता, विपक्ष एक दूसरे पर तीर छोड़ने और तलवारें उठाने से बाज नहीं आ रहे हैं। दुनियाभर में यह एक खतरनाक महामारी का रूप धारण कर चुका है। देश तो इस संकट में कोरोना की दूसरी लहर के कहर से बस जूझ ही रहा है। इस बार कोरोना के रिकॉर्ड तोड़ते नये मामलों और बिगड़े हालातों ने सरकारी तंत्र की सभी तैयारियों को तार-तार कर दिया है। तमाम प्रयासों और पर्याप्त संसाधनों का दावा करने वाले, सच तो ये ही है कि स्थिति को नियंत्रण करने में पूरी तरह लाचार होते हुए असहाय दिख रहे हैं। इस दूसरी लहर के प्रकोप ने तो सारी व्यवस्थाओं को आईना दिखा दिया। क्या हम कोविड से लड़ने में युद्ध स्तर की तैयारी करने में सक्षम थे? दरअसल हर शख्स को आत्ममंथन करने की जरूरत है। तीसरी लहर के खतरों से लड़ने के लिए पहले से नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सुदृढ़ व सुरक्षित सरकारी व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी।

वर्तमान स्थिति का खौफनाक मंजर ... स्वास्थ्य सेवाओं और उनकी व्यवस्था पर जबरदस्त मार, संयंत्रों का अभाव, दवाइयों और ऑक्सीजन की कमी होने के साथ उनकी जमाखोरी करने वाले लोगों ने तो मानो मानवीय पीड़ा व दुखड़े को पैसा कमाने का जरिया ही बना लिया है। एक कटु सत्य यह भी है कि इन्सानों की सांसें बाजार में तराजू पर रख कर मोल-भाव करते देखने का अहसास इन्सानियत की सभी हदों को पार कर चुका है। यही नहीं, मनुष्य का अन्तिम सफर में परिवारजनों की व्यथा भी अव्यवस्थित व्यवस्था के तहत आँसुओं के मोल भी खोते देखना अत्यंत दुखदायी है। मानो मानवीय संवेदनाओं ने मॉस्क नहीं, बल्कि आंखों पर पट्टी बांध कर रखा हुआ है।

यूँ तो वैक्सीनेशन का तीसरा फेस शुरू हो चुका है, किन्तु यहाँ भी उसकी उपलब्धि और लगने- लगाने पर भी राजनीति ...बेहद शर्म की बात है कि केन्द्र व राज्यों के बीच आपसी सहयोग और विश्वास का अभाव वर्तमान स्थिति में टीकाकरण कार्यक्रम को भी कमजोर कर रहा है, जो कोरोना के बचाव का मुख्य विकल्प है। देशवासियों की सुरक्षा की ओर उठाये गये कदमों में बाधाएं लाना किसी भी नेता को शोभा नहीं देता। कोरोना के तांडव के विकराल स्वरूप से अनभिज्ञ नहीं हैं हम सब, फिर भी स्थिति को नियंत्रित करने में हमारी सरकार असफल ही रही।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आने वाले समय में ऐसी परिस्थितियों का सामना किसी को न करना पड़े। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हम सब अपनी जिम्मेदारियां ईमानदारी से निभाते रहें। हर व्यक्ति का अपना और समाज के प्रति भी कर्तव्य याद होना चाहिए कि देश में मंडरा रहा कोरोना संकट में सरकारी तंत्रों के साथ मिलकर इस लड़ाई में साथ दें। यह समय एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप का नहीं है। एकजुट होकर लड़ाई में शामिल योद्धाओं को यथाशक्ति अपना योगदान देने की ओर अधिक तेजी से हम कार्य करें। इस दौरान हुए हर नकारात्मक अनुभवों से सीख लें और सकारात्मक पहलुओं और ऊर्जा के साथ पहल करें। उन सभी लोगों के साथ इस युद्ध में शामिल हों, जो पहले से इस दिशा में जुट कर काम कर रहे हैं। रोजाना आने वाले हर क्षेत्र के सरकारी आंकड़ों के जंजाल न फंसे। जमीनी हकीकत आंखों के सामने है। इस मुश्किल समय में जरूरतमंदों की मदद करने के लिए किसी के निमंत्रण या बुलावे की जरूरत नहीं है ... कुछ कर नहीं सके, इस मलाल में ना जीयें हम।

वक्त का तकाजा है और परिस्थितियों की अहम जरूरत ...मानवता का मरहम। जिन्दगी छीन रही है, ऐसे में इंसानियत का पाठ याद करें। यही हर धर्म और संस्कृति को शोभा भी देता है। इस कठिन लड़ाई को नौ ग्रहों शांति या जप-तप पूजा से फतह हासिल नहीं की जा सकती। इस बार हम सब की बारी है, अपना अपना कर्म करने की। देश और समाज के प्रति अपने को जागरूक रखें, क्योंकि इस बार किसी भी तरह की लापरवाही बरतना अति घातक साबित हो सकता है। कोरोना की अनुमानित तीसरी लहर के खतरे को सहन करने के लिए हम समर्थ नहीं हैं। ईश्वरीय आदेश का पालन करें ... सेवा भाव, प्रेम, दया, दूसरों को सम्मान देने में ही जीवन का परम सुख छिपा है। मानवीय मूल्यों का भी यही है सार। मानवता की महानता मानव होने में नहीं, बल्कि मानवीय होने में है। अपनों की सहायता ना करनेवाले में दया नहीं होती, दूसरों को दुख पहुंचाने वाले में शर्म नहीं होती ... मजबूरी का लाभ उठाने वाले में इन्सानियत नहीं होती।

जाके पांव न फटी बिवाई, वो क्या जानें पीर पराई।